

1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर:

कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना करता है कि जीवन में उसे विपदाएँ (कठिनाइयाँ) अवश्य मिलें, परंतु साथ ही उन्हें सहने और उनसे लड़ने की शक्ति भी उसे मिले। उसका विश्वास जीवनभर अटल बना रहे।

2. 'विपदाओं से मुझे बचाओ, यह मेरी प्रार्थना नहीं'—कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर:

कवि यह नहीं चाहता कि उसके जीवन में दुख-दर्द या कठिनाई कभी आए ही नहीं, बल्कि वह शक्ति की प्रार्थना करता है जिससे वह उन विपदाओं का सामना धैर्यपूर्वक कर सके।

3. सहायक के ना मिलने पर कवि की क्या प्रार्थना है?

उत्तर:

अगर कठिन समय में कोई सहारा न मिले, तो भी उसका पुरुषार्थ, धैर्य और साहस बना रहे—वह अकेले भी आगे बढ़ सके और स्वयं को संभाल सके।

4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?

उत्तर:

कवि यह प्रार्थना करता है कि चाहे सब लोग उसे छोड़ दें, धोखा दें, सभी दुख उसे घेर लें लेकिन उसका ईश्वर पर विश्वास कमजोर न हो—उसकी आस्था अडिग, अटल बनी रहे।

5. 'आत्मत्राण' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'आत्मत्राण' का भाव है—आत्मा की रक्षा या आत्मा का संबल। कवि कठिनाइयों के नष्ट न होने, अपितु उनसे बचने की शक्ति पाने की बात करता है—इसलिए शीर्षक पूर्णतः उपयुक्त है।

6. इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त क्या प्रयास करते हैं?

उत्तर:

मनुष्य को केवल प्रार्थना ही नहीं, परिश्रम, साहस, संघर्ष, धैर्य, कमियों का सुधार, लक्ष्य-निर्धारण, सतत प्रयास—ये सब करने चाहिए; तभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।

7. यह प्रार्थना अन्य गीतों से भिन्न क्यों है?

उत्तर:

यहाँ कवि कष्टों के दूर होने की प्रार्थना नहीं करता, बल्कि उन्हें सहने और उनसे लड़ने की शक्ति माँगता है। अधिकांश प्रार्थनाओं में सुख, शांति की याचना होती है—यहाँ कठिनाइयों को स्वीकार कर, कर्मशील और आस्थावान बने रहने का भाव है।

(ख) भाव स्पष्ट कीजिए—

1. नत शिर होकर सुख के दिन में, तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

उत्तर:

कवि सुखी समय में भी विनम्र बना रहना चाहता है; हर क्षण ईश्वर को स्मरण और उनके प्रति आभार या श्रद्धा रखना चाहता है।

2. हानि उठानी पड़े जगत में, लाभ अगर वंचना रही तो भी मन में ना मानूँ क्षय।

उत्तर:

कवि चाहता है कि चाहे हानि हो या लाभ से वंचित रहना पड़े, मनोबल में कमी न आए, परिस्थिति कैसी भी हो—आत्मविश्वास बना रहे।

3. तरने की हो शक्ति अनामय, मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तर:

कवि विपत्ति में सांत्वना या भार हल्का करना नहीं चाहता; वह चाहता है प्रभु शक्ति दें कि वह स्वयं साहसपूर्वक, निर्भय होकर जिम्मेदारियाँ निभाए।